विशेष कृतियां

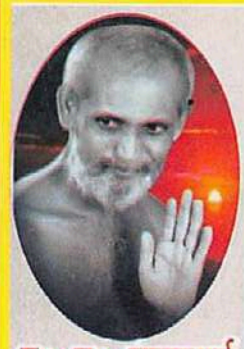

प० पू० एलाचार्य
वसुनन्दी जी
मुनिराज

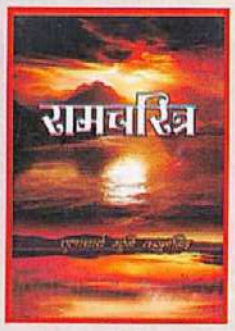

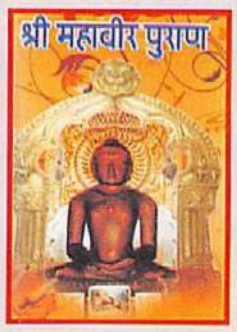

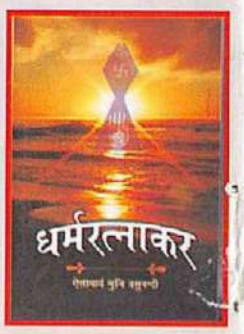

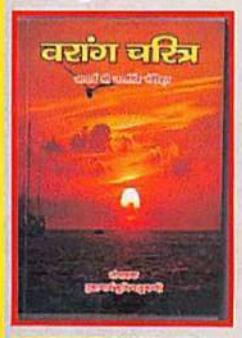

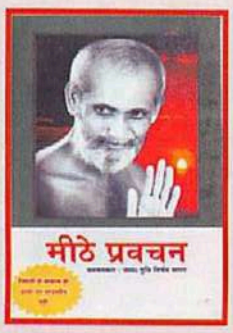

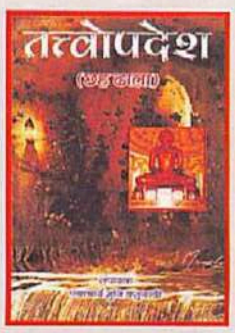

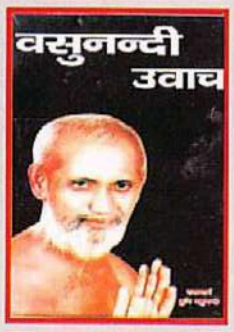

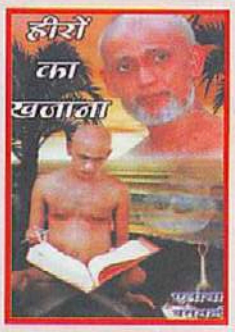

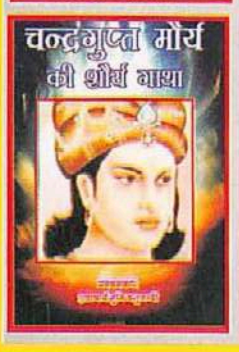

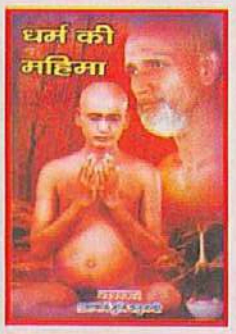

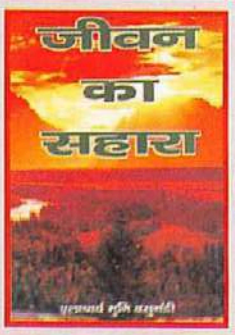

PRINTED BY
D.C. MIDIA NIKUNJ
TUNDLA (FIROZABAD) U.P.
Mob.9058017645

गुरु कृपा

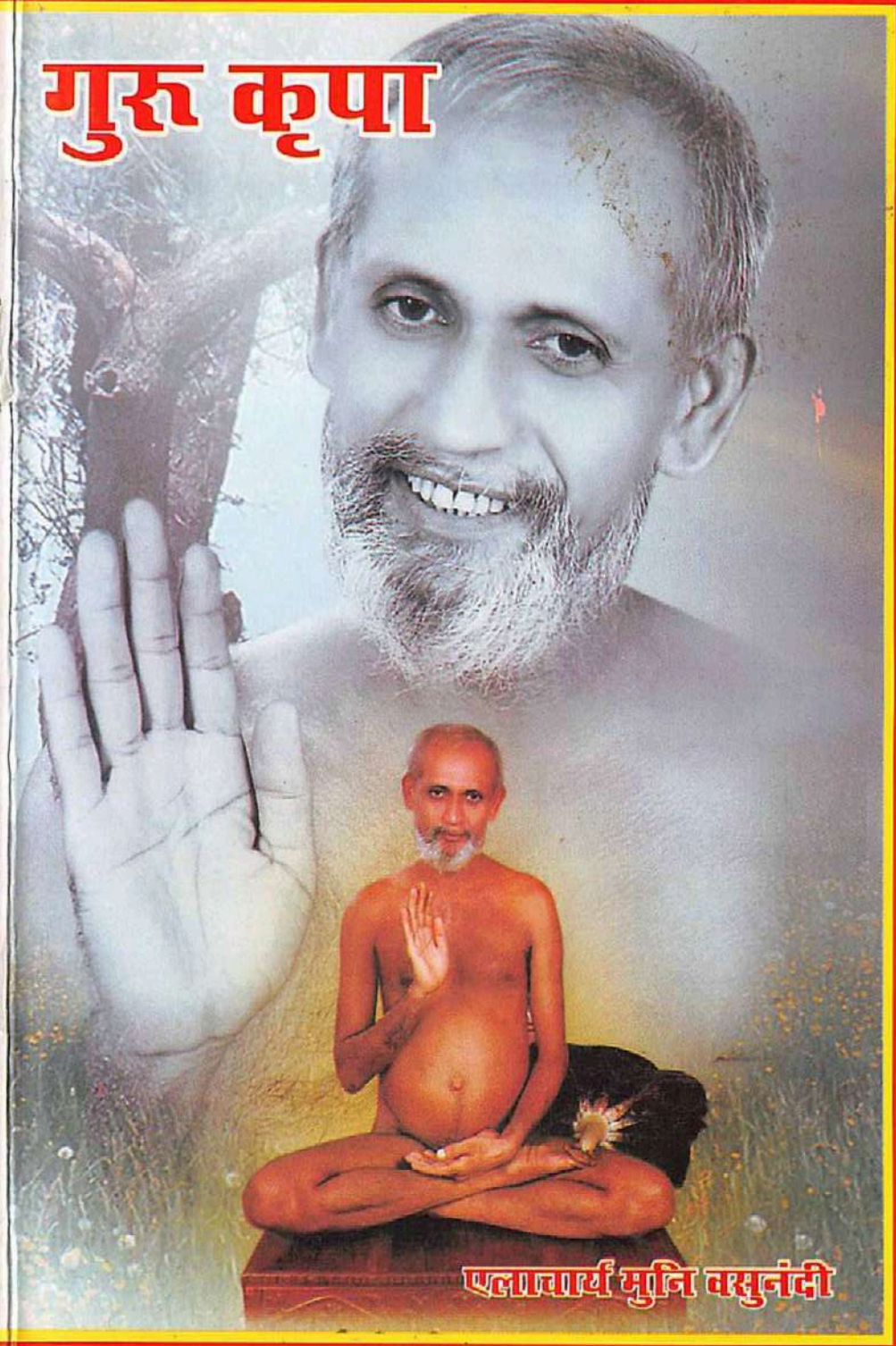

गुरुकृपा

वर्ष भर जीवनोपयोगी जीवन को सफल एवं सार्थक
करने वाले गुरु मुख से निकले सूत्र
(11/10/2009 से 10/10/2010 तक)

-:प्रवचनकार:-
एलाचार्य मुनि वसुनंदी

प्रकाशक:
डी०सी० मीडीया ''निकुंज'' टूण्डला
फिरोजाबाद उ०प्र०

कृतिः

गुरुकृपा

शुभाशीषः

प.पू. राष्ट्रसंत, सिद्धांत चक्रवर्ती दि. जैनाचार्य
श्री १०८ विद्यानंद जी महाराज

प्रवचनकारः

एलाचार्य मुनि वसुनन्दी

सहयोगीः

संघस्थ सभी साधुवृंद एवं त्यागी व्रती

प्रथम संस्करणः **अक्टूबर २०१०**
5000 प्रतियाँ

मूल्यः **२० रुपये**

प्रकाशकः

डी.सी. मीडीया टूण्डला फिरोजाबाद उ.प्र.

मुद्रकः

जैन रत्न सचिन जैन ''निकुंज'' मो० 9058017645

प्राप्ति स्थानः

श्री सत्यार्थी मीडीया राष्ट्रीय कार्यालय
रविन्द्र भवन इन्द्रा नगर टूण्डला चौराहा
फिरोजाबाद (उत्तर प्रदेश)

पुण्यार्जक श्रावक

स्व० श्री ओमप्रकाश जी जैन
की स्मृति में
श्रीमती कलावती जैन
एवं चक्की वालों का
परिवार कचहरी रोड
मेरठ (उ०प्र०) के
सौजन्य से
१००० प्रतियाँ
प्रकाशित।

पुण्यार्जक श्रावक

धनराज जैन
श्रीमती मखमली देवी जैन
श्रीमती नीतू जैन धर्मपत्नी
मनीष जैन
गाजियाबाद के
सौजन्य से
१००० प्रतियाँ
प्रकाशित

गुरु कृपा

अक्टूबर माह

११ अक्टूबर २००९ से ३१ अक्टूबर २००९ तक

11. संसार में ऐसे लोग बहुत हैं जो सोचते और बोलते हैं किन्तु जीवन में कुछ सार्थक पहल नहीं कर पाते।

12. समयाभाव की शिकायत अधिकांश वे व्यक्ति ही करते रहते हैं जो सदैव अपने समय का दुरूपयोग करते रहते हैं।

13. निर्बल, रूग्ण एवं उच्छृंखल मन कभी भी सम्यक् सुदृढ़ एवं सार्थक संकल्प ग्रहण नहीं कर सकता अतः अपने मन को, सबल निरोगी एवं नियंत्रित बनाकर रखो।

14. आलसी व्यक्ति जीवन बिताने का आदी हो गया है अब वह सार्थक कार्य करने में भी असमर्थ रहेगा तथा व्यस्त जीवन जीने के लिये सदैव उसके पास समय का अभाव ही रहेगा।

15. क्या आपको अपने मनुष्य भवरूपी वृक्ष का ज्ञान है अथवा यूं ही कष्ट कर बर्ताव कर रहे हो, सोच-सोच कर सोचो।

16. परीक्षा की घड़ियो में ही व्यक्ति के व्यक्तित्व में निखार आता है परिणाम घोषित के अवसर से नहीं।

17. जिस वृक्ष की जड़ें जितनी गहरी होती हैं वह वृक्ष उतनी अधिक ऊँचाई को प्राप्त करता है।

18. जो भक्त ईमानदारी के साथ अपना समग्र जीवन प्रभु और गुरू चरणों में समर्पित कर देते हैं वे कभी दर दर की ठोकरें नहीं खाते।

19. अंतस प्रेम को तोड़ने के लिये लाठी, पत्थर, अस्त्र, शस्त्र या वाक्य बाणों से प्रहार करने की आवश्यकता नहीं है इसके लिये तो एक उपेक्षा दृष्टि ही पर्याप्त है।

20. जो उन्नति के सर्वोच्च शिखर को छूना चाहता है उसे स्वयं में परिवर्तन लाना आवश्यक है, स्वयं में परिवर्तन करने से डरने वाला कभी उन्नति नहीं कर सकता।

21. माता पिता के आचरण का भी बालकों पर प्रभाव पड़ता है अतः बालकों को मात्र मौलिक शिक्षा ही मत दो, खुद आचरण भी शुद्ध रखो।

22. जो व्यक्ति अत्यधिक जल्दबाद या उतावले पन में कार्य करता है उससे त्रुटियाँ ज्यादा होती हैं तथा वह प्रायः करके तनावग्रस्त ही रहता है।

23. यदि आप अपने अवगुण रूपी कीचड़ प्रभु के चरणों में छोड़ने में समर्थ हैं तो आप स्वतः निर्मल दशा को प्राप्त कर सकते हैं, तुम्हें दूसरे के उपदेश की कतई जरूरत नहीं होगी।

24. आकाश के तारों को गिनना एवं समुद्र की गहराई नापना आसान है किन्तु मन को जानना, चित्त को पाप से बचाकर पुण्य में लगाना आसान नहीं है।

25. हमारे विचारों का स्तर ही हमारे मन/चित्त व चैतन्यता के स्तर को निर्धारण करता है, क्योंकि अच्छे मन में बुरे विचारों का जन्म नहीं होता।

26. जिसे आत्मा व परमात्मा के अस्तित्व, स्वरूप व अनुभव में कोई शंका नहीं, वही तीन लोक में अखण्ड निर्भीकता की दशा को प्राप्त करता है।

27. जीवन में सबसे बड़ा भय या दुख का कारण है मृत्यु तथा निर्भयता का कारण है धार्मिक जीवन या आत्मा में धर्म का यथार्थ अनुभव! रोग की पहचान होने पर भी औषधि न लेना क्या मूर्खता नहीं हैं?

28. अच्छा वक्ता बनना अलग बात है किन्तु यथार्थ सन्मार्ग दर्शक विरला हो सकता है, अनुकरणीय जीवन जीने वाला साधक मौन रहते हुए भी श्रेष्ठ वक्ता है।

29. जब लोग आप को नहीं समझते तब भी चिंता न करो आप स्वयं अपने आपको सम्यक् रूप में समझने का व सही मूल्यांकन करने का प्रयत्न कीजिये।

30. असत्यता पर आधारित कोई भी उपलब्धि रेत की दीवार पर खड़े भवन की तरह क्षणध्वंसी ही है।

31. भगवान को अपना मार्ग दर्शक और संसार के समस्त जीवों को अपना मित्र बना लो फिर निर्भीक बन कर रहो, कोई तुम्हारा बालबाँका भी न कर सकेगा।

नवम्बर माह

१ नवम्बर २००९ से ३० नवम्बर २००९ तक

1. सबसे अधिक बलशाली वह है, जिसने स्वयं पर पूर्ण विजय प्राप्त कर ली है मात्र दूसरों को जीतने वाला सर्वाधिक शक्तिशाली नहीं हो सकता, अतः आत्मविजयी/इन्द्रिय विजयी/इच्छाविजयी/मनोविजयी बनो।

2. आप अपने अधिकारों का प्रयोग करने के लिये ज्यादा उतावले न बनें, अपितु यह भी सदैव ध्यान रखें कि आप कर्तव्य निष्ठ भी हैं या नहीं।

3. सम्यक्त्व, संयम, संतुलित जीवन, संतुष्टि, समन्वयवादी विचार धारा महानता के लक्षण हैं इन्हें ग्रहण करने का पुरूषार्थ करो।

4. परमात्मा को अपना सर्वस्व समर्पण करने से अपना चित्त दर्पण जैसा निर्मल हो जाता है, जो ऐसा नहीं कर सकते उसके चित्त की शुद्धि अशक्य है।

5. सामान्य व्यक्ति समय की जलधारा में उसके अनुरूप ही बहे चले जाते हैं किन्तु महापुरूष समय की जलधारा को अपने अनुसार बदल कर चलते हैं।

6. आत्म नियंत्रण से निस्सीम नियंत्रण शक्ति प्राप्त होती है जो आत्म नियंत्रण कर चुका है सारा विश्व उसके नियंत्रण में रहने को लालायित रहता है।

7. कभी कभी हम शक्ति से दूसरों को बदलने के लिए मजबूर कर देते हैं किन्तु हम यह भी तो कर सकते हैं कि स्वयं बदल कर दूसरों को बदलने की प्रेरणा दें।

8. पौद्गलिक दर्पण में अपना चेहरा देखा जा सकता है चरित्र नहीं, आत्म दर्शन या चरित्र दर्शन को महात्मा या परमात्मा रूपी दर्पण में ही देख पाना संभव है।

9. सच्चा मनो विजयी वही कहलाता है जो एक समय में एक कार्य करने का संकल्प लेता है, अन्य विकल्प जहाँ ठहर नहीं पाते हैं।

10. आज का दिन जीवन का सर्वोत्तम दिन है आज आप अच्छे से अच्छा कार्य कर सकते हैं, बुरे से बुरे कार्य का फल भोग कर इसे नष्ट कर सकते हैं, आज के दिन को बहाने बाजी करके टालो मत।

11. घृणा युक्त भाव से दिये उपदेश से या बैर युक्त भाव से किये गये निवेदन से प्रेम युक्त भाव से दिया गया उपदेश श्रेष्ठ है, प्रेम युक्त आदेश में उपरोक्त दोनों से बहुत अधिक शक्ति है।

12. अच्छा है कि बोलते समय आप अल्प विराम, पूर्ण विराम यथास्थान लगाना जानते हैं, किन्तु क्या आप अपने दुर्भावों पर भी अल्प विराम और पूर्ण विराम लगाना जानते हों। यदि नहीं तो इसे भी सीखिये, इसके बिना आपकी पढ़ाई अधूरी ही कहलायेगी।

13. शाब्दिक ज्ञान का अर्जन जितना अधिक करते जाओगे उतने ही अहंकार से फुग्गे की तरह फूलते जाओगे किन्तु अध्यात्मिक ज्ञान की ज्यों-ज्यों वृद्धि होती है व्यक्ति उतना ही अधिक बनता चला जाता है।

14. परिवार का सौहार्द्रपूर्ण वातावरण परिवार के सदस्यों को ही प्रभावित नहीं करता अपितु समाज के लिये भी उदाहरण बनता है।

15. आप अपनी खामियाँ जान लें, खूबियाँ अपने आप आ जायेंगी।

16. अपना केन्द्र अपने से बाहर मत रखो, यह आपका पतन कर देगा, अपने में अपना पूर्ण विश्वास रख अपने केन्द्र पर डटे रहो, कोई भी शक्ति तुम्हें हिला न सकेगी।

17. मन को स्थिर कर कही हुई बात कभी कभी साधारण होने पर भी बड़ा काम कर जाती है।

18. सुख के संबंध में शुद्ध विचार ही सुख की परिस्थितियों को निर्मित करेंगे।

19. चीजों को टुकड़ों में देखोगे तो भ्रमित होगे और पूर्णता में देखोगे तो संतुष्ट होंगे। अखण्ड दिल में अखण्ड शांति है।

20. व्यक्ति के जाने के बाद आयी रिक्तता ही उसके व्यक्तित्व का मूल्यांकन करा पाती है।

21. ज्यों ही तुम सफलता को ढूंढना छोड़ दोगे, सफलता तुम्हें तुरंत ढूंढ़ती आयेगी।

22. गम्भीरता आपके चेहरे में नहीं निर्णय में होना चाहिये, हर समय चेहरे पर व्याप्त गम्भीरता के फायदे कम हैं, खतरे अधिक।

23. सुखद विवाह का रहस्य सही व्यक्ति पाने में नहीं है, बल्कि स्वयं सही बन जाने में हैं।

24. प्रगति के नाम पर घूमते विपरीत पहिये आगे नहीं बढ़ते बल्कि गाड़ी को भी नुकसान पहुँचाते हैं।

25. कार्य की सफलता ही बताती है कि उसने आप पर जो विश्वास किया वह विश्वास के योग्य था।

26. अध्यात्म का अमृत संयमित चित्त में ही ठहरता है, असंयमित और चंचल चित्त फूटी बाल्टी के समान होता है, जिसमें क्षण भर के लिये उपदेश रूपी जल भरता है, किन्तु चंचलता के छिद्रों के कारण हृदय में टिकता नहीं।

27. ममता फाँसी है, समता सिंहासन। जीव ममता से बंधता है और समता से मुक्त होता है।

28. साधक को चैतन्यता के आकाश में विहार करने के लिए बोध और वैराग्य के दो पंख चाहिये।

29. समय, पात्र और परिस्थिति का आंकलन कर बोलने वाला कभी अपमानित नहीं होता।

30. पारदर्शिता की मांग करने वाले इतना पारदर्शी आचरण करने लगे हैं कि वे असभ्यता की कोटि में आ गये हैं।

दिसम्बर माह

१ दिसम्बर २००९ से ३१ दिसम्बर २००९ तक

1. अपेक्षा अकल्पनीय हो तो, आगे का रास्ता अत्यंत कठिन होता है।

2. आदमी को जीवन के अन्त में हास्य और परिपक्वता मिलती है एवं महिलाओं को आँसू और चेहरे पर झुर्रियाँ मिलती हैं, यह कैसी विडम्बना है।

3. समयानुकूल कार्य और संचित धन सफलता में साधक बनते हैं।

4. परेशानी से वे लोग अधिक बचना चाहते हैं, जो जीवन भर दूसरों को परेशान कर आनंद मानते रहे।

5. अगर आपके पास प्रश्नों का समाधान नहीं है तो कोशिश करें कि आपका जीवन प्रश्न चिन्हों से न घिरे।

6. मन की स्वाभाविक इच्छाओं, भावनाओं का मरते रहना, आत्महत्या का ही दूसरा रूप है।

7. सफलता के लिये जरूरी है आप स्वयं अपने प्रतियोगी बनें।

8. अपना चेहरा अपनी आँखों से देखों, आँखे झुक जाये तो चेहरा नहीं कर्म बदलो।

9. अपेक्षा अकल्पनीय हो तो आगे का रास्ता अत्यंत कठिन हो जाता है।

10. स्वयं के स्वतन्त्र अस्तित्व के लिये स्वयं की विचार धारा भी होना चाहिये।

11. राजनीति में चुप और चीख, दोनों महत्वपूर्ण होती है अतः या तो चुप रहो या चीखो।

12. मनुष्य के प्रथम व्यवहार का मूल लक्षण उसकी मधुर मुस्कान है।

13. क्षणिक सफलता पर जश्न मनाने वाल क्षणिक असफलता पर बौखला उठते हैं।

14. धर्म के ज्ञाता होने पर धर्म भीरूता भी आती है और अधार्मिकता भी बढ़ती है।

15. गुजरता हुआ वक्त अनेक फैसले अपने आप करा देता है।

16. अच्छे विचार ही अच्छे कर्मों के पुष्प हैं तथा वही फलों के सृजक/निर्माता हैं। अतः मुझे/आपको चाहिये कि मैं/आप सदैव अच्छे विचारों के बीज बोने में ही संलग्न रहूँ/ रहो।

17. यदि आप प्रत्येक कार्य को भगवान का कार्य मानकर करते हैं तो प्रत्येक कार्य पूजा की श्रेणी में ही अन्तर्निहित जानो।

18. जब चित्त में शांति होती है तो बाह्य अशांति भी चित्त को अशांत करने में असमर्थ हो जाती है। जैसे शांत चित्त से मंदिर के घंटे पर बैठी हुयी तितली।

19. अहिंसक व पाप भीरू मित्रों की संगति सदैव सुखद व शांति कारक होती है अतैव हिंसक, हिंसा व हिंस भाव से बचो।

20. जो वर्तमान काल के क्षणों का सदुपयोग करने में असमर्थ है तब यह कैसे कहें कि वह भविष्य के समय का सदुपयोग ही करेगा?

21. यथार्थता के धरातल पर खड़ा व्यक्ति ही अपना मार्ग दर्शक हो सकता है, मिथ्याज्ञानी कभी सन्मार्ग प्रदायक नहीं हो सकता, वह तो स्व पर का घातक ही होता है।

22. किसी का सुधार करने हेतु या समझाने हेतु उस पर वार या प्रहार मत करो, इससे बेहतर यही होगा कि खुद अपना ही सुधार करो इसका प्रभाव अचूक ही होगा।

23. आप अपने आप में इतने सुदृढ़ रहो कि कभी कदाचित् आपके सहयोगी अपने विचार बदल कर असहयोगी या विरोधी भी बन जाये, तब भी आप अपने लक्ष्य को पा सको।

24. एक ईमानदार व्यक्ति कभी किसी अनजान व्यक्ति की नजरों से भयभीत नहीं होता, उसकी आँखों में तो सदैव सत्य का तेज चमकता रहता है।

25. यदि कोई व्यक्ति अंधकार में है तो इसका आशय यह नहीं कि वह शाश्वत अंधा है, अरे! वह कभी भी अंधकार को नष्ट कर शाश्वत प्रकाश पा सकता है।

26. हमें सदैव सावधान रहना चाहिये क्योंकि हमारी प्रत्येक क्रिया की प्राकृतिक जीवन में प्रतिक्रिया भी अवश्य होती है।

27. सद् इच्छायें धन के अभाव में रूकती नहीं हैं, किन्तु धन के बिना पूरी भी नहीं होती हैं।

28. महत्वपूर्ण यह नहीं है कि वह यह कर पाया, महत्वपूर्ण तो यह है कि वह यह जानता था कि वह यह कर पायेगा। यह आत्म विश्वास विरलों में ही होता है।

29. परेशानी से वे लोग अधिक बचना चाहते हैं जो जीवन भर दूसरों को परेशान कर आनंद मानते रहें।

30. आपके पास कम से कम एक गुण तो अवश्य होगा उसे ही विकसित करें यह मत सोचो कि सब गुण आपके पास नहीं हैं, आखिर निर्गुणी का निर्गुण भी एक गुण ही होता है।

31. समस्त उन्नति की आधारशिला आत्मा ही है।

पक्षियों को दाना डालने से व्यापार अच्छ चलता है।

चींटी (कीड़ी) को आटा डालने से कर्ज कम हो जाता है।

जनवरी माह

१ जनवरी २०१० से ३१ जनवरी २०१० तक

1. धर्म के प्रति सच्चा समर्पण होने पर ही सम्यक् जीवन प्रारम्भ होता है।

2. प्रसन्नचित्त मानव धर्म ध्यान के अधिक निकट होता है, दुःख और शोक में डूबे महानुभाव आर्त ध्यान के पिंजरे में कैद हैं।

3. सत्पुरूषों की महानता उनके विशुद्ध अंतःकरण के आधार से है, लोगों की प्रशंसा के आधार पर नहीं।

4. जिनका मुख सदैव कमल की तरह खिला रहता है, सूर्यातिाप रूपी संकट भी उसके लिए अहित एवं संताप प्रद नहीं होता।

5. जो हर परिस्थिति में संतुष्ट रहना जानता है, उसे संसार की कोई परिस्थिति कर्तव्य पथ से नहीं डिगा सकती।

6. अपनी शारीरिक शक्ति का प्रयोग संतान प्राप्ति के लिए करना, वासना है और भगवान उपासक ही "ब्रह्मचारी" है।

7. कल की भूल से आज का दिन दुःखद व्यतीत हुआ है तो कम से कम कल के दिन को तो व्यर्थ एवं दुःखद बनाने का काम मत करो।

8. "परिणामों की निर्मलता" से की गई प्रभु भक्ति, गुरूसेवा एवं तप त्याग संयम व अहिंसा की साधना निःसंदेह मानव की तकदीर एवं तदवीर बदलने में समर्थ होती है।

9. संसार एक रंगमंच है और उस मंच पर किये जाने वाले जीवन रूपी नाटक के पात्र, यदि चाहें, तो नकल से भी असल का बोध पा सकते हैं।

10. कर्म को ध्वस्त करने के लिए धर्म में व्यस्त रहिये।

11. प्रसन्नचित्त व्यक्ति धूप की वह किरण है, जिसका अत्यंत सुखद प्रभाव खेतों और वनस्पतियों पर पड़ता है।

12. राग सीमित होता है, संकीर्ण होता है, स्वार्थ युक्त भी होता है, निश्छल प्रेम, निस्सीम, उदार एवं परमार्थ युक्त होता है।

13. सौन्दर्य के लिए, प्रसन्नता से बढ़कर कोई श्रंगार नहीं।

14. अपनी जुबान पर उन बातों को मत लाइये, जिन्हें आप स्वयं नहीं जीत पाये हैं।

15. वासनायें आदमी को बदसूरत और सरलता आदमी को सुन्दर बना देती है।

16. यदि जिंदगी को नरक नहीं बनाना चाहते तो न किसी से अपेक्षा करो, न उपेक्षा पर ध्यान दो।

17. हमारी शान कभी न गिरने में नहीं है, बल्कि जब-जब हम गिरें, तो हर बार उठने में है।

18. आनंद ही वह वस्तु है जो आपके पास न होने पर भी आप दूसरों को बिना किसी असुविधा के दे सकते हैं।

19. एक बार की असफलता आधी विजय है, क्योंकि अभ्यास आदमी को पूर्ण बनाता है।

20. तृष्णा को अभी से जीतने का प्रयास करो, नहीं तो वृद्ध होने पर जवान तृष्णा को जीतना तुम्हारे लिए मुश्किल हो जायेगा।

21. यदि श्रद्धा अखण्डित है तो कार्य सिद्धि में शंका क्यों? और शंकायुक्त श्रद्धा है तो कार्य सिद्धि हेतु निष्फल पुरूषार्थ क्यों?

22. मान-सम्मान से दूर रहकर ही सच्ची विरक्ति प्राप्त हो सकती है।

23. वैराग्य संसार से पार करा देता है, लेकिन बैर संसार में डुबो देता है।

24. जो पुरूष दूसरों के सद्गुणों से उसका मूल्यांकन करता है, वही गुणों की यथार्थता को जान सकता हैं।

25. स्वयं के पाप कर्मों के उदयागत हुये बिना संसार का कोई भी प्राणी आपका अनिष्ट नहीं कर सकता।

26. संसार के बदलने ना बदलने से मेरा उतना हित-अहित नहीं जितना स्वयं के शुभाशुभ परिणामों के बदलने में है।

27. सत्य परेशान हो सकता है, परास्त नहीं।

28. दूसरों के दोषों को देखने वाली इस बुरी आदत का परित्याग कीजिये, यदि ऐसा करने में असमर्थ हैं, तो यह संकल्प ले लो कि मैं दूसरों में जो दोष देखूँगा, उसका (दोष का) यावज्जीवन परित्याग कर दूँगा।

29. प्रतिकूलता में ही प्रेम और श्रद्धा का पता चलता है।

30. आज संसार में जितनी भी अच्छाईयाँ विद्यमान है, उन सभी का आधार यदि तुम बहुत गहराई में जाकर देखोगे तो तुम कृतज्ञता को ही पाओगे।

31. जो धर्म में व्यस्त, अपने में मस्त, शरीर से स्वस्थ है वही मोह को अस्त व दुःखों को ध्वस्त करने में समर्थ होता है।

फरवरी माह

१ फरवरी २०१० से २८ फरवरी २०१० तक

1. गुणों की संगति, गुण ग्राहक दृष्टिकोंण, गुणों का सही मूल्यांकन, व्यक्ति को गुणों से परिपूर्ण कर सकता है। "गुणों की प्यास को तीव्र करो।"

2. जब हमें कोई कष्ट और दुःख इष्ट नहीं है तो हमें दूसरों को भी वह कष्ट व दुःख नहीं देना चाहिये, यही सुखी जीवन का उपाय है और यही है धर्म का सही रूप।

3. आलस्य मानव का सबसे बड़ा शत्रु है, जो आलसी हैं, वे जीवन में कोई महान् उपलब्धि प्राप्त नहीं कर सकते। उनका जीवन स्व-पर के लिए भारभूत होता है।

4. व्यक्ति चाहे तो संकल्प की दृढ़ता से अपनी कृति, वृत्ति, प्रवृत्ति एवं प्रकृति को बदलने में समर्थ हो सकता है।

5. यदि धोबी गंदे कपड़े पहने हुये हो तब भी आपके कपड़े एकदम स्वच्छ कर सकता है, इसी तरह माता-पिता ने जिन अच्छी शिक्षाओं को जीवन में भले ही पालन नहीं किया हो फिर भी उनकी सलाह अच्छी व नेक हो सकती है।

6. उस इंसान से ज्यादा गरीब कोई नहीं जिसके पास केवल पैसा है।

7. एक दिन की खुशी के लिए पिकनिक मनाइये, एक माह की खुशी के लिए शादी कर लीजिये और यदि जीवन भर के लिए खुशी चाहिये हो तो मस्त रहने की आदत बना लीजिये।

8. हमारी जिन्दगी इतनी लम्बी नहीं है कि हम सिर्फ अपनी ही गलतियों से सीखें, अतः बुद्धिमानी इसी में है कि दूसरों की गलतियों से भी सीख लें।

9. गलत फहमियों में डूबे रहना गलतियों से (गलतियाँ करने से) भी खतरनाक है।

10. अपराध करने के पश्चात् भय पैदा होता और यही उसका दण्ड है।

11. दुष्ट लोग अपने दोषों के संदर्भ में जन्मांध होते हैं, और अन्य दूसरे के दोष देखने में दिव्य नेत्र वाले होते हैं।

12. परिवार का सौहार्दपूर्ण वातावरण परिवार के सदस्यों को ही प्रभावित नहीं करता अपितु समाज के लिये भी उदाहरण बनता है।

13. उपवास से बड़ी तपस्या गुरू की आज्ञा का पालन करना है।

14. स्त्री लज्जा के द्वारा इतना कुछ कह जाती है, कि मनुष्य धर्मोपदेश में भी उतना नहीं कह पाता।

15. अतीत को मुस्कराहटों के साथ याद करें, आँसुओं के साथ नहीं।

16. सौभाग्य और दुर्भाग्य मनुष्य की दुर्बलता के नाम हैं।

17. कटोरा लेकर माँगने वाला ही भिखारी नहीं है, अपितु संग्रह करने वाला ही सबसे बड़ा भिखारी है।

18. जितना भोग करना बुरा नहीं है, उतना वर्जित भोग का चिन्तन करना बुरा है।

19. अनुचित आलोचना अपरोक्ष रूप से आपकी प्रशंसा ही है।

20. अधिकता में नहीं आवश्यकता में जियें।

21. दुनियाँ में खुशनसीब तो वे हैं, जिन्हें माता-पिता व गुरूओं द्वारा सत्कर्तव्य के सूत्र मिलते हैं।

22. मनुष्य अपनी इच्छाओं का दमन करके सुख प्राप्त कर सकता है, उनकी पूर्ति करके नहीं।

23. यह निर्भ्रांत सत्य है कि बालकों की मानसिक शक्तियाँ स्त्री के स्नेह की छाया में जितना पुष्ट और विकसित हो सकती है, उतनी किसी अन्य उपाय से नहीं।

24. जब भी नदी बहती है वह समीपस्थ गड्ढों को जल से भरती हुई आगे बढ़ती है, इसी तरह प्रेम की नदी की गति को भी ऐसा ही समझना।

25. जिन योजनाओं को हम भविष्य में साकार रूप न दे सकेंगे, ऐसी असम्भव योजना बनाना समय की बर्बादी करना है, असम्भवी योजना की अपेक्षा लघु कार्य भी जीवन को सार्थक कर सकता है।

26. उपवास से बड़ी तपस्या गुरू की आज्ञा का पालन करना है।

27. प्रभु परमात्मा की स्मृति, प्रीति, प्रतीती, आत्मानुभूति में कारण है, संसार से भीति, आध्यात्मिक नीति एवं स्वात्मोपलब्धि की रीति निज कल्याण का साधन है।

28. हमारा व्यवहार कुएँ के निकट खड़े होकर बोली गई आवाज की तरह होता है, हम दूसरों के प्रति जैसा व्यवहार करते हैं, उसका प्रतिफल भी हमें वैसा मिलता है।

मार्च माह

१ मार्च २०१० से ३१ मार्च २०१० तक

1. जो व्यक्ति एक बार आलस्य का अतिथि बन गया तो जीवन भर उसके आतिथ्य को छोड़कर निकल पाना कठिन है।

2. अच्छा वक्ता, तो कोई भी बन सकता है, किन्तु जिसका सब अनुसरण (अनुकरण) कर सके, ऐसा श्रेष्ठ साधक बनना बहुत कठिन है।

3. जो व्यक्ति अपनी बुराईयों को स्वयं नहीं खोज सकता, उसी को अन्य व्यक्ति उसकी बुराईयाँ बताते हैं।

4. गुरू के निकट होकर दूर होना श्रेष्ठ नहीं, दूर होकर निकट होना अतिश्रेष्ठ है।

5. सद्गुरू सोना नहीं कसौटी देता है।

6. गुरू के निर्देशन के आगे अपना चिन्तन एक किनारे रखना चाहिये।

7. यदि स्वयं को भेड़ बना लोगे तो सिंह आकर तुम्हें खा जायेंगे।

8. कामना की धूल भक्ति के दर्पण को गन्दा कर देती है।

9. अपने गुणों से आगे बढ़ना चाहिये, दूसरों की कृपा से नहीं।

10. बचपन में सरलता, यौवन में नम्रता, बुढ़ापे में इच्छा निरोध, ये महान बनने के लक्षण हैं।

11. प्रचार एवं प्रसार, संयम के बिना विष बेल के समान है।

12. संसार में रहकर सबसे बड़ा कार्य आत्मा से साक्षात्कार करना है।

13. संसार के समस्त भौतिक सम्बन्ध मिथ्या हैं। आध्यात्मिक सम्बन्ध ही सम्यक् है।

14. निरर्थक, अनर्थक व नकारात्मक विचारों की समाप्ति के लिए अपने इष्ट आराध्य देव का स्मरण, भावना, उपासना एवं ध्यान करना चाहिये।

15. विश्व के सर्व पदार्थों को प्राप्त करना उतना महत्वपूर्ण नहीं होता जितना उत्तम समाधि प्राप्त करना।

16. युवावस्था में विवेक हीनता से भोगा गया इन्द्रिय सुख, वृद्ध अवस्था में दुःख और निराशा का कारण होता है।

17. यदि आप समर्थ पुरूष बनना चाहते हैं तो अपने से पूज्य पुरूषों के सामने असमर्थ बन जाइये।

18. दीर्घ संसारी वह है जो किसी घटित घटना में दूसरे के दोषों को देखता है।

19. उन्नति व लोकप्रियता का मूल मंत्र आज्ञा और बल प्रयोग नहीं सेवा और प्रेम है।

20. आचरण, लक्ष्य को प्राप्त करने वाला गतिशील वाहन है।

21. जिन्हें दान देने का व्यसन है, उनके पास कभी देय वस्तु की कमी नहीं होती।

22. अपना आभामंडल हृदय की परछाई है मन की नहीं।

23. विचारों का क्रिया-कलाप व्यक्तित्व का परिचायक नहीं।

24. समर्पण की भूमि पर उत्तम विचार होते हैं, तो भक्ति के तल पर संकल्प होता है।

25. मृत्यु का भय मोह पैदा करता है, निर्भयता मोक्ष को।

26. शक्ति नष्ट करने वाला एक प्रचलित कार्य है, विवाह।

27. सफलता साहस की गुलाम है, आलस की नहीं।

28. प्रतीक्षा प्रेम की परीक्षा है व परीक्षा प्रेम का फल।

29. आदमी को अपनी प्रसिद्धि के लिए अपनी विशुद्धि नहीं खोना चाहिये।

30. चाहे आप हिम के समान निर्मल और निष्पाप हो जाओ, तब भी निंदा से नहीं बच सकते।

31. जीव का अपवित्र मन ही प्रधान नरक है, उस मन की वेदना, चिंता, भय और अशांति ही नारकीय यातना है।

अप्रैल माह

१ अप्रैल २०१० से ३० अप्रैल २०१० तक

1. अपनी मेहनत का फल पाने के लिए बैचेन मत होइये वरना पका हुआ फल पाने से वंचित रह जाओगे।

2. शूरवीरता का सबसे बढ़िया, सबसे शानदार और सबसे दुर्लभ अंग है धीरज।

3. शत्रु का लोहा गरम भले ही हो जाये पर हथौड़ा तो ठंडा रहकर ही काम दे सकता है।

4. एलोपैथी और होम्योपैथी जहाँ काम नहीं करती वहाँ सिम्पैथी काम करती है।

5. साहस, विवेक, धैर्य, एकाग्रता एवं उद्यमशीलता जीवन की रहस्यमयी विद्यायें हैं।

6. सदैव आत्मा व परमात्मा के प्रति सच्चे बनकर रहो।

7. निश्चल प्रेम भौतिक सुख का आधार है, जिससे आनंद ले रहे हो उसके प्रति विश्वस्त भी बनो।

8. जिसके पास जितनी योग्यता है वह वैसा ही व्यवहार करेगा।

9. विकारी परिणाम भव्यों के जीवन में शाश्वत नहीं रह सकता।

10. अगर तुम सुख चाहते हो तो अतीत का विकल्प और अनागत की चिंता मत करो।

11. अपनी आत्मा को अपने स्वभाव के अनुकूल बनाओ और प्रसन्नचित्त रहो।

12. तुम अपने अंतरंग में ऐसी धैर्यता प्रकट कर लो जो कि दूसरे की मन, वचन, काय की प्रतिकूलता भी तुम्हारे अंतरंग को क्रुद्ध न कर सके।

13. वात्सल्य पाने के लिए अपनी आत्मा को गुणों का सागर बनाओ, इसके बिना दूसरों का कोरा वात्सल्य पा लेना अर्थहीन ही है।

14. महान् विचारों का उभरना श्रद्धा है तो उन्हें साकार करना है भक्ति।

15. उत्तम विचारों का दमन करना आत्महत्या है।

16. मृत्यु का भय मोह पैदा करता है, निर्भयता मोक्ष को।

17. ज्ञान की जड़ें कड़वी हैं लेकिन फल मीठे हैं।

18. कल्याण भाव से रहित परिश्रम ऊधम है।

19. एक नदी के उसी जल में दुबारा उतरना असम्भव है।

20. मंगलमयी प्रभात की प्रथम किरण गुरु समर्पण से प्रारम्भ होती है।

21. जिंदगी राह के लिए है, गुनाह के लिए नहीं।

22. शक्ति की कमी विचारों में कमी नहीं लाती, साकार करने में कमी लाती है।

23. चिंता सदैव पर या पर के निमित्त से पैदा होती है, चिन्तन सदैव अपना होता है।

24. जितनी स्वतंत्रता अंतरंग में है, वह उतना ही ब्रह्मचारी है।

25. भय और भोग का आनंद, दोनों एक साथ नहीं ठहर सकते।

26. गृहस्थ का आध्यात्मिक अर्थ है, अपने आत्मा रूपी घर में निवास करना।

27. निंदनीय पुरूष के सच्चे सेवक भी नियम से निंदा व तिरस्कार को ही प्राप्त होते हैं, आज भी और कल भी।

28. असाधारण जीवन बिताने के लिए असाधारण कार्य करना भी आवश्यक है।

29. आलस्य दुर्बल मन वालों के लिए शरण है तथा मूर्खों के लिए अवकाश दिवस।

30. अवसर या अनुकूल समय उनकी सहायता कभी नहीं करता जो अपनी सहायता स्वयं नहीं करते।

मई माह

१ मई २०१० से ३१ मई २०१० तक

1. स्वेच्छा से ग्रहण किये गये दुःख को भी ऐश्वर्य या सुख सम्पत्तिवत् भोगा जा सकता है।

2. अब तक अनुकरण करके कोई महान् नहीं बना, जो महान् बना है उसका दुनिया ने अनुकरण किया है।

3. आत्मज्ञान से युक्त व्यक्ति बाहरी कोई वस्तु नहीं चाहता है।

4. वही मानव उन्नति कर सकता है, जो उपदेश दूसरों को कम स्वयं को ज्यादा देता है।

5. सफलता संघर्षों का मार्ग तय करने पर मिलती है।

6. बुद्धिमान व्यक्ति दूसरों को आपत्ति में देखकर ही स्वयं सावधान हो जाता है।

7. दिगम्बर अवस्था महान् इसलिए भी होती है, क्योंकि वे स्वयं निर्भय रहते हुये सब को अभय प्रदान करते हैं।

8. अपने अंदर शांति हो जाने पर सारे विश्व में शांति दिखायी देती है।

9. दुष्ट पुरुष को जीतने के लिए मौन भाषा ही सर्वोत्तम अस्त्र है।

10. संसार में संसारी प्राणियों का अहित करने वाले दो ही शत्रु हैं, मोह और अज्ञान।

11. सभी महान् वस्तुयें सदैव अच्छी नहीं होती किन्तु प्रत्येक अच्छाई महानता की प्रेरक होती है।

12. क्षमा मांगना मात्र शारीरिक श्रम ही है, यदि अन्तर में निर्मलता का अभाव है।

13. धैर्य व आत्मविश्वास से बढ़कर मित्र तुम्हें पूरे संसार में कहीं नहीं मिलेंगे।

14. प्रेम का व्यवसाय नहीं हो सकता और न ही प्रार्थनाओं का विक्रय।

15. बीमारियों से ज्यादा घातक औषधियाँ होती जा रही हैं, एकांतवाद के विष से मिश्रित शास्त्रीय ज्ञान घातक है।

16. सम्यक् सन्देह ही समीचीन विश्वास तक पहुँच सकता है, बिना सन्देह विश्वास नहीं मिलता।

17. मित्र के लिए जीवन देना इतना कठिन नहीं है, जितना कि ऐसे मित्र की खोज करना जिसको जीवन दिया जा सके।

18. जिस कर्म को तुम बांधने में समर्थ हो तो तुम उसे तोड़ने की भी सामर्थ्य से युक्त हो, इस बात को कभी मत भूलो।

19. पुण्य तथा पुण्य फल की वांछा करना पराधीनता को ही स्वीकार करना है।

20. दूसरों में दोष दिख जायें तो आप उनसे बचने का संकल्प ले लें, तब तो दोष दिखना भी सार्थक है।

21. किसी की निंदा करके सुधारने की आशा कीचड़ से कीचड़ धोने के समान है।

22. वैराग्य सत्य के सिवाय किसी के सामने नहीं झुकता।

24. अति विचार करने की अपेक्षा सम्यगनुभूति करना अत्यंत शुभ है।

25. तरूणी के साथ रमण कर भव-भ्रमण मत करो अपितु तरूणी को तरिणी (नौका) के समान बनाकर तारण-तरण बनो और आत्म रमण करो।

26. असंभव शब्द मूर्खों के ही शब्दकोश में मिलता है।

27. युवावस्था पूर्ण विकसित पुष्प के समान है, इस पुष्प को परमात्मा के चरणों में समर्पित कर दो अन्यथा यह पुष्प व्यर्थ ही मुरझा जायेगा।

28. गंभीरता कहने, सुनने, चर्चा करने का विषय नहीं है, अपितु जीवन में धारण करने के लिए निजी गुण भी है।

29. उदारता ही गंभीरता की सहचारिणी है।

30. संसार में वे प्राणी दरिद्र हैं जो दूसरों के स्वागत में दो मधुर शब्द भी नहीं बोल सकते।

31. हमें जलने की जरूरत है, दहकने की नहीं।

जून माह

१ जून २०१० से ३० जून २०१० तक

1. गम्भीरता, साधकों की साध्य सिद्धि का अनुपम हेतु है।

2. गुरुदेव का चरण सान्निध्य संसार की समस्त दुःखद शक्तियों से भव्य जीवों की रक्षा करता है।

3. सबसे बड़ा दोष किसी भी बात का ज्ञान न होना है।

4. उसके आगे हमेशा सिर झुकाओ, जिसने तुम्हें सिर उठाना सिखाया है।

5. हिंसा को अहिंसा में बदलने के लिए हस्ताक्षर की नहीं हस्तक्षेप की अतिशीघ्र आवश्यकता है।

6. सिर्फ स्वाद, सौंदर्य और सम्पदा के लिए हिंसा होती है।

7. यदि हम दूसरों के लिए रोना सीख लेंगे तो बहुत से लोग हँसने लगेंगे।

8. बड़प्पन के भाव का नाप ही मान है।

9. आप बातों के बादशाह नहीं आचरण के आचार्य बनो।

10. परमात्मा को पाने में प्रेम नहीं वासना ही बाधा बनती है।

11. अहोभाव में झुकना ही प्रार्थना है, अनुगृहीत होने की भावना ही प्रार्थना है।

12. जब वासना की मुक्ति होती है, तब प्रार्थना का जन्म होता है।

13. अपने दोषों को स्वीकार करना एक उत्कृष्ट साहस है।

14. निर्धनता प्रकट करना, निर्धन होने से अधिक दुःखदायी होता है।

15. सत्य के अनन्य भक्त के लिए मौन आध्यात्मिक नियंत्रण का एक अंग है।

16. मनुष्य के लिए निराशा के समान अन्य कोई पाप नहीं है।

17. चरित्र विरोधी भोगी, असंयमी व्यक्ति मुनि के आगमन से दुःखी होता है।

18. चार चीजें सदा बढ़ती ही रहती हैं, भूख, निद्रा, भय व लोभ।

19. आगे वालों से जलिये मत और पीछे वालों पर हँसिये मत।

20. जो चीज जितनी सरल होती है उसकी परिभाषा उतनी ही मुश्किल होती है।

21. सत्य के उपासक के लिए स्तुति और निंदा एक ही होनी चाहिये।

22. आत्महत्या, अस्थाई समस्या का स्थायी समाधान है।

23. धर्म और प्रेम जीवन का दान देकर हाँसिल किया जाता है।

24. भलाई जितनी अधिक की जाती है, उतनी ही अधिक फैलती है।

25. अज्ञान की संतान मोह और मोह की संतान दुःख है।

26. अपने कार्य को इतनी लगन से कीजिये कि असफलता असम्भव हो जाये।

27. गर्व आगे चलता है और उसके पीछे कलंक अनुकरण करता है।

28. आनंद वह खुशी है, जिसके भोगने पर पछताना नहीं पड़ता।

29. केवल निराशा ही प्रगति में बाधा है।

30. निठल्ला बैठा रहकर खाने वाला श्रेष्ठ मनुष्य भी पापी है।

जुलाई माह

१ जुलाई २०१० से ३१ जुलाई २०१० तक

1. मूल से ही जिंदगी की भूल मिट जाती है।

2. पवित्र विचार दूसरे की दिशा को भी मोड़ सकता है।

3. हमें रूप को नहीं रूह को संवारना है।

4. भय मिटाने के लिए उसका डटकर के सामना जरूरी है।

5. गलत जीवन अंत में भयभीत नजर आता है।

6. प्रसन्नता का अर्थ परिणामों की निर्मलता से है न कि चेहरे की बनावटी मुस्कुराहट अथवा अट्टाहास से।

7. विषय कषाय की सामग्री जुटाना भी अशुभपयोग है।

8. तुम अपनी स्वतंत्र सत्ता स्वीकार किये बिना आत्मीय सुख व अनंत आनंद का भोग नहीं कर सकते।

9. जो संतोष धारण कर सकता है, वह अपरिमित वैभव का आनंद भी भोग सकता है।

10. अब देश से नहीं अपितु इस देह से स्वतंत्र होना चाहिये।

11. ईर्ष्या से बचने का उपाय मानसिक अनुशासन है।

12. बदला लेने में साहस नहीं, बल्कि उसे सहन करने में साहस है।

13. दूसरे की पोल खोलने वाला व्यक्ति यह साबित कर देता है कि मैं कितने गहरे पानी में हूँ।

14. काम वासना पर विजय जीवन का सबसे ऊँचा पुरुषार्थ है।

15. जिसके जीवन में प्रयत्नशीलता नहीं, वह या तो पशु है या मुक्त है।

16. किसी के गुणों की प्रशंसा में अपना समय बर्बाद न करो बल्कि उसके गुणों को अपनाने का प्रयास करो।

17. वियोग की धूप, प्रेम के फल को पका कर रसदार बना देती है।

18. विशेषज्ञ वही है जो कम से कम को ज्यादा से ज्यादा जाने।

19. कष्ट और विपत्ति मनुष्य को शिक्षा देने वाले श्रेष्ठ गुण हैं।

20. वह कभी शहद प्राप्त नहीं कर सकता, जो मक्खियों के डंक से डरता है।

21. विवाह का अर्थ आदर्श शरीर के द्वारा आध्यात्मिक मिलन है।

22. विश्वास बुद्धि की संतान है और आस्था आत्मा की देन।

23. व्यक्ति जिस प्रकार का विश्वास रखते हैं, उसे वैसे ही सबूत मिलते हैं।

24. वे जरूर जीतेंगे, जिन्हें अपने जीतने की शक्ति में पूरा विश्वास है।

25. उत्तम व्यक्ति शब्दों में सुस्त और चारित्र में चुस्त होता है।

26. सत्य को शोध करने के लिए साधन भी सत्य चाहिये।

27. स्वार्थी का कोई साथी नहीं होता, जो साथी होता है वह कभी स्वार्थी नहीं होता।

28. तुम्हें नदी बनना हो तो ठहरने की जिद छोड़ो, नदी का स्वभाव बहना है, यह अर्थ कभी नहीं भूलना चाहिये।

29. सफलता के लिए जरूरी है कि आप स्वयं अपने प्रतियोगी बनें।

30. एक नकारात्मक मन हमेशा अहंकारी होता है।

31. भावुकता व्यक्तित्व की पूरक है और अति भावुकता कमजोरी।

अगस्त माह

१ अगस्त २०१० से ३१ अगस्त २०१० तक

1. प्रेम मनुष्य को अपनी ओर खींचने वाली चुम्बक है।

2. चिंता से रूप, बल, ज्ञान, तेज, पराक्रम का नाश हो जाता है।

3. गुरू का सम्पर्क स्वयं के लिए किया जाता है, मात्र गुरू के नाम के लिए नहीं।

4. उत्साह जीवन की वह सम्पदा है, जो संसार की किसी भी वस्तु को खरीद सकती है।

5. वास्तविक स्वयं सेवक तो वही है, जो आत्मा की सेवा करे।

6. अग्नि स्वर्ण को परखती है एवं आपत्ति वीर को परखती है।

7. आत्मानंद का अनुभव स्वयं को तथा प्रेम-वात्सल्य का आनंद सामने वाले को होता है।

8. शत्रुओं को क्षमा करना बदला लेने का सबसे सुन्दर साधन है।

9. प्रोत्साहन लक्ष्य प्राप्ति का एक प्रबल उपाय है।

10. यथेष्ट तन एवं धन को प्राप्त कर धार्मिक क्रिया में अपना मन न लगाने वाला मूर्ख है।

11. आशावादी हर कठिनाई में अवसर देखता है एवं निराशावादी हर अवसर में कठिनाई देखता है।

12. वह मित्रता जहाँ दिल नहीं मिलते बारूद से भी बदतर है, बड़ी बुलन्द आवाज से ऐसी मित्रता टूटती है।

13. मौन मानव के जीवन में ताजगी उत्पन्न करता है।

14. अनियमित गरीबी से अनियमित अमीरी ज्यादा खतरनाक है।

15. गुरू का सम्पर्क स्वयं के लिए किया जाता है, मात्र गुरू के नाम के लिए नहीं।

16. सबसे अनासक्त होकर अपने लक्ष्य के प्रति आसक्त रहो।

17. सुख-शान्ति का विकास आकुलता के अभाव में होता है।

18. अपनी गलती को मान लेना झाड़ू लगाने जैसा काम है जो कचरा बाहर करके जगह को साफ करती है।

19. हठ, क्रोध और मूर्खता बहस के पक्के सबूत हैं।

20. जो स्वार्थी है वह उस फौव्वारे के समान है जिसके छिद्र बंद हैं।

21. जंग लगकर नष्ट होने की अपेक्षा जीर्ण होकर नष्ट होना ज्यादा अच्छा है।

22. अगर तुम गलतियों को रोकने के लिए दरवाजे बंद कर दोगे, तो सत्य भी बाहर आ जायेगा।

23. पंख होते हुये भी घोंसले में बैठे रहने वाले पक्षी को क्या भला कहा जा सकता है।

24. 90 प्रतिशत की चिंतायें 10 प्रतिशत की लापरवाही से जन्म लेती हैं।

25. जो कम बोलता है, उसे कम बातों का जवाब देना पड़ता है।

26. हर कार्य का समय होता है, हर समय के लिए कार्य होता है।

27. अपना आवेग ठंडे बस्ते में डाल दो वह प्यार में बदल जायेगा।

28. खुशामद को पसंद करना हीन भावना का द्योतक है।

29. हजार वर्ष का यश एक दिन के स्वच्छाचरण पर निर्भर करता है।

30. सरलता, विनम्रता, पवित्रता, सत्यता एवं यथार्थ समर्पण पूज्य पुरूषों से भी स्नेह प्राप्त करने के साधन हैं।

31. दूसरे व्यक्ति की कमजोरी को अपने मन में धारण करने से वह (कमजोरी) आपकी कमजोरी बन सकती है।

सितम्बर माह

१ सितम्बर २०१० से ३० सितम्बर २०१० तक

1. संयम एक ऐसा हीरा है, जो हर किसी पत्थर को घिस सकता है।

2. कोई ऐसा क्षण नहीं जो कर्तव्य से खाली हो।

3. लोगों में शक्ति की नहीं संकल्प शक्ति की कमी होती है।

4. दुनिया में सबसे अच्छा साथी आपका दृढ़ निश्चय है।

5. तूफान दीये को भले ही बुझा दे पर दीया तूफान को देख अपनी लौ कम नहीं करता।

6. कम खर्चा करना निर्धनों का धन है और धनवानों की बुद्धिमत्ता है।

7. मूर्ख और मृत व्यक्ति कभी अपने मत नहीं बदलते।

8. झुंझलाहट के क्षणों में न हमारे विचार पवित्र हो सकते हैं और न हमारे कर्म।

9. तीखे और कटु शब्द कमजोर पक्ष की निशानी है।

10. साहस शरम का लंगर उखाड़ फेंकता है।

11. उत्तेजना तो बरैया के छत्ते में पत्थर फेंकने के समान है।

12. मुस्कराते चेहरे से दिया गया जलपान पूरा भोजन हो जाता है।

13. शंका धीमी आत्महत्या है।

14. चंचलता (मन की) की शिकायत वे लोग किया करते हैं जो उपयोग का दुरूपयोग करते हैं।

15. स्वयं की अच्छाई और बुराई को दूसरों की दृष्टि से मत नापो।

16. रौब की तीक्ष्ण तलवार रेशम को नहीं काट सकती।

17. यदि हर कार्य को यह समझ कर करें कि सर्वज्ञ भगवान मेरा साथी है तो व्यक्ति कभी पाप कर ही नहीं सकेगा।

18. हमारी सबसे बड़ी मुसीबतें वे हैं जो हम पर कभी नहीं आती।

19. अपनी उत्तेजना में दूसरे व्यक्ति को निर्दोष समझो।

20. जितनी बात का विस्तार करोगे उतना ही लोग भूल जायेंगे।

21. आकांक्षा उतनी करो जितनी योग्यता है।

22. हे आत्मन्! कोई भी मुश्किल, मुश्किल नहीं है, गर तुम उसे मुश्किल न (आसान) समझो तो।

23. जब परेशानियाँ तुम्हें चारों तरफ से घेर लें तब तुम्हें धैर्य और साहस नामक मित्रों को साथ लेकर चलना चाहिये।

24. लोक को अभी से जीतने का प्रयास प्रारम्भ कर दो अन्यथा कभी नहीं जीत सकोगे।

25. प्रतिकूलता व विघ्न बाधायें आगे बढ़ने व चढ़ने हेतु सीढ़ी के समान हैं, उन्हें उन्नति में बाधक समझना भूल है।

26. जिम्मेदारियों का सम्यक् निर्वाह करते हुये भी मन को संतुलित बनाये रखना भी जीवन को जीने की उत्तम कला है।

27. पवित्र हृदय से प्रेम के साथ बोला गया एक शब्द भी अनेक दुःखी आत्मा को सुख-शांति प्रदान कर सकता है।

28. सद् साहित्य सत्संग की तरह से उपकारक है।

29. गर हम दाव चूक गये तो चिंता की कोई बात नहीं, हम यह प्रयास करें कि हमारे भाव पुण्यार्जन से कभी न चूकें।

30. भौतिक धन से सम्पन्न व्यक्ति यदि आत्मज्ञान रूपी धन से हीन है तो वह निर्धन ही कहलायेगा।

अक्टूबर माह

१ अक्टूबर २०१० से १० अक्टूबर २०१० तक

1. जो स्वयं अपने आप को बदलने में समर्थ हैं वे अपने दुःख को सुख में बदल सकते हैं।

2. उन्नति का मार्ग विनयाचार, शिष्टाचार, सदाचार व संयमित व्यवहार से प्रारम्भ होता है, अहंकार, क्रोध, विषयासक्ति व विलासिता के साथ नष्ट हो जाता है।

3. मानव जगत में हमारी पहचान हमारे शुभाशुभ व्यवहार से होगी, मात्र वस्त्रों से या वचनों की चतुराई से नहीं।

4. भ्रांति के जाल में फँसा हुआ व्यक्ति सत्य के निस्सीम गगन में उड़ने का आनंद नहीं ले सकता।

5. सज्जनता की परीक्षा प्रतिकूलताओं में होती है, क्योंकि अनुकूलता में तो सभी सज्जनवत् ही दिखाई देते हैं।

6. समय का सही मूल्यांकन या सदुपयोग वह कर सकता है जो सहिष्णु, धैर्यशील, नम्र एवं उद्यमशील है।

7. आत्म श्रद्धा, प्रभु भक्ति, तत्त्वज्ञान, संयम एवं निज परिणामों की निर्मलता ही महामानव का सच्चा धन है।

8. अल्पज्ञ वह है जिसे स्वकीय बोध का अहंकार है तथा बहुश्रुतज्ञ वह है जो अनुभव पूर्ति श्रुतज्ञान से युक्त होता हुआ भी सदैव विनम्र रहता है।

9. सकारात्मक सोच पंगु व्यक्ति को आगे बढ़ने में वैसाखी की तरह सहायक है, किन्तु नकारात्मक सोच व निराशावादी दृष्टिकोण पतन की प्रेरक व सन्मार्ग की बाधक अर्गला है।

10. अत्यधिक चिंता या तनाव किसी समस्या का समाधान नहीं है, अतः मस्तिष्क को शिथिल रखें शरीर को चुस्त या फुर्ती युक्त और चित्त प्रसन्न रखें।